ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-9* December-2021
Anthology : The Research

शून्य
Zero

Paper Submission: 10/12/2021, Date of Acceptance: 21/12/2021, Date of Publication: 22/12/2021

उमेश चन्द
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
शहीद मंगल पांडे
राजकीय महिला
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
माधव पुरम मेरठ, उ0प्र0,
भारत

सारांश / **Abstract**

वह शोध-पत्र जो शून्य के भारतीय इतिहास में प्रयोग एवं इसकी प्रमाणिकता पर प्रकाश डालता है तथा इतिहासकारों या अन्य विद्धानों ने जो यह मान्यता स्थापित की है कि भारत में शून्य का प्रयोग एवं उपयोग 5वीं सदी से हुआ है। उस सिद्धांत एवं मान्यता को अप्रमाणिक सिद्ध करने का प्रयत्न करता है तथा इस बात को सिद्ध व प्रमाणिक करने के लिये कि भारत में शून्य का प्रयोग एवं उपयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है। जबसे भारतीय सभ्यता का उदय हुआ है के लिये सिन्धु सीयता से प्राप्त मोहरों, सांकेतिक चिन्हों जो भी आवश्यक सामग्री पुरातत्व विभाग द्वारा एकत्रित की गयी है जिसमें परोक्ष रूप से शून्य एकत्रित की गयी है जिनमें परोक्ष रूप से शून्य को प्रदर्शित किया गया आदि का उद्धारण लेते हुए तिाा वेदों में उपयोग किये गये तथा श्लोकों एवं ऋचाओं में उल्लेखित उद्धरणों हवाला एवं रामायण एवं महाभारत काल तक के युग में शून्य के प्रयोग को इन महान प्राचीन ग्रंथों में दिये गये श्लोकों के माध्यम से शून्य के उपयेाग एवं प्रयोग को सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि भारत में शून्य का प्रयोग पांचवी सदी से नहीं अपितु प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रारम्भ से ही शून्य का प्रयोग भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में होता आया है।

The research paper that throws light on the use of zero in Indian history and its authenticity and historians or other scholars who have established the belief that zero has been used and used in India since the 5th century. Tries to prove that theory and belief unproven and to prove and prove that zero has been used and used in India since ancient times. Ever since the rise of Indian civilization, for the seals obtained from the Indus civilization, whatever necessary material has been collected by the Department of Archeology, in which indirectly zero has been collected, in which indirectly zero was displayed etc. Tried to prove the use and use of zero through the verses given in these great ancient texts, used in the Vedas and the quotations mentioned in the verses and hymns, and the use of zero in the era till the Ramayana and Mahabharata period. It has been said that zero has been used in India not from the fifth century but since the beginning of ancient Indian history, zero has been used in Indian culture and civilization.

मुख्य शब्दः शून्य, अवधारणा, सृष्टि, उपभोग उदभव, अंतराल इत्यादि।
Keywords: Void, Concept, Creation, Consumption, Origin, Gap etc.

प्रस्तावना

शून्य अर्थात जीरों एक ऐसी संख्या जिसके बिना सृष्टि में सभी कार्य यहीं तक क सृष्टि का निर्माण भी मेरे अनुसार असम्भव है। क्योंकि जहाँ तक भी हम देखे या अध्ययन करें। किसी भी दर्शन में एक बात सर्वस्व नज़र आती है कि कौन है? क्या है?, कहाँ है? ये एक ऐसा दर्शन है जो शब्दों में एवं दार्शनिक के दर्शन में स्वतः ही जीरों या शून्य को स्पष्ट करता है। यहाँ शून्य संख्या एक ऐसा स्पष्ट चिन्ह है जो सृष्टि में है भी और नहीं भी। उदाहरण के रूप में अगर देखें तो। यदि शून्य को हम एक अकेले उसी के स्वरूप में लिखे तो वह कुछ नहीं होती जैसे (0) इसका अर्थ कुछ भी नहीं है। लेकिन इसी शून्य को यदि हम किसी भी अन्य संख्या के साथ लिखे तो यह उस अंक का मान ही बदल देती है। जैसे यदि हम किसी भी अंक को क्रम से लिखे जैसे 1 तो यहाँ एक मात्र एक को ही निरूपित करता है। यदि इसे एक साथ हम शून्य को साथ ले तो यही एक दस, सौ, एक हजार, लाख, दस लाख, करोड़, दस करोड़, अरब, दस अरब, खरब, दस खरब अर्थात एक अनन्त राशि तक जा सकती है। जैसे यदि हम इसे डायग्राम के माध्यम से समझे तो इस प्रकार होगा।

मात्र 1 लेने पर तथा इसमें शून्य लगाने पर-

1
10
100
1000
10000
100000
1000000
10000000
100000000
1000000000
10000000000
100000000000

1000000000000

यहाँ शून्य डायग्राम के माध्यम से हमने यह जाना तथा सिद्ध किया कि शून्य के जिसका स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं होते हुए भी। ह किस प्रकार अन्य अंकों को जीवन एवं आकार प्रदान करता है। यदि हम दार्शनिक रूप से देखे तो शून्य बिल्कुल भगवान सृष्टि पर स्पष्ट न होते हुए भी। सृष्टि को जीवन एवं आकार प्रदान करते है। यहाँ सबसे अहम बात यह है कि वर्तमान शोध में नासा ने जिस डार्क एनर्जी1 की खोज की है यदि उसकी व्याख्या कि जाये तो वह भी शून्य के समान ही नजर आयेगी जिसका कोई अस्तित्व नहीं है। परन्तु वही सृष्टि के निर्माण का आधार है।

चाहे सनातन हिन्दू धर्म हो या उसकी शाखाऐं सभी जब अपने-अपने दर्शन में ईश्वर या सृष्टि की व्याख्या करते है। तो उसे व्याख्या को सही रूप से देखे तो वह शून्य के सदृश नजर आती हैं यहाँ शून्य के लिए इतनी बड़ी व्याख्या करने का एकमात्र कारण यह है कि वास्तव में शून्य क्या है? वास्तव में शून्य ही एक मात्र ऐसा साधन है। जो समस्त सृष्टि का आधार है जो स्वयं में कुछ न होकर सृष्टि का मूल है।

यदि शून्य की वास्तविकता को आंका जाये या इस संख्या का अंकन किया जाये तो यह एक गणीतय अंक है और इस शोध-पत्र का उद्देश्य यही है कि वास्तव में शून्य का अस्तित्व कब से प्रारम्भ होता है।

व्याख्या

शून्य के उदभव के बारे में यदि हम चर्चा करे तो इसका उदभव सैद्धांतिक तोर पर हमें 5वीं सदी में आर्य भट्ट के समय से प्राप्त होती है कि शून्य की खोज सर्वप्रथम आर्य-भट्ट ने की परन्तु यह बात कहना पूर्णतः गलत होता की शून्य का अविष्कार या सर्वप्रथम प्रयोग आर्य-भट्ट ने किया था। क्योंकि यदि हम शून्य के उपयोग के विषय पर ध्यान दे तो हमें शून्य का उदभव मानव सभ्यता के उद्भव के साथ ही प्राप्त हो जाता है। विश्व के सबसे प्राचीन एवं विकसित सभ्यता सिन्धु सभ्यता में हमें शून्य के प्रमाण प्राप्त होते जिसकी व्याख्या निम्न प्रकार है।

सिन्धु सभ्यता में शून्य के प्रामण

सिन्धु सभ्यता की खोज वैसे तो 1923 ई0 में हुई थी। परन्तु इसके सर्वाधिक पुराने नमुने हमें 1853 ई0वी0 से ही प्राप्त होते है।2 सिन्धु सभ्यता की खुदाई से हमें लगभग 64 मूल चिन्ह एवं 205 से लेकर 400 तक के अक्षरों के नमुने प्राप्त हुए है। सिन्धु सभ्यता की लिपि चित्रात्मक लिपि थी। जिसका उत्कीर्षन सेलखडी एवं तांबों की मुहरों पर किया गया था। वैसे इस लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका हैं तथा इस लिपि में हमें 17 ऐसे बड़े चिन्ह प्राप्त हुए है। जो शून्य को प्रदर्शित करते है तथा जिनसे हमें सिन्धु सभ्यता में शून्य के होने का प्रमाण प्राप्त होता है इन प्रमाणों में हमें यहाँ से प्राप्त मोहरों से प्राप्त होते है। जैसे सिन्धु सभ्यता में वर्गाकार मोहरे आयताकार मोहरे या गोलाकार मोहरे यहाँ इन मोहरों का गोलाकार होना इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि सिन्धु सभ्यता में शून्य का विकास था। इसके अतिरिक्त यदि हम मोहरों के स्थान पर हड़प्पा कालीन लिपि के चित्रों को देखते है तो उन चित्रों में भी हमें कई स्थानों पर गोलाकार चित्र प्राप्त हो जाते है। जो कई स्थानों पर लगभग आर्यभ्ट की शून्य के सृदृश्य नजर आते है।[3] बेशक यह हडप्पा कालीन लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है और इनको देखकर जो अनुभव प्राप्त होता है उसे हम वर्तमान ज्ञान के आधार पर कही त्रिभुजाकार कही, आयताकार कही गोलाकार कही वर्गाकार, कही षष्ठ भुजाकार आदि शब्दों में पिरोकर प्रस्तुत करते है। तो फिर वही इन चित्रों व मुहरों के निर्माण में प्रयोग किये जाने वाले उस गोल चिन्ह को हम जीरों या शून्य क्यों नहीं कह सकते जो कि देखने में और अनुभव करने में हमें शून्य सदृश्य नज़र आता है। अतः यहाँ इन प्रमाणों से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि शून्य तो सिन्धु सभ्यता में भी है। परन्तु उस शून्य को हम पढ़े कैसे जैसे शून्य के प्रयोग करने पर हमें पाते है कि यदि शून्य को किसी संख्या से पूर्व लिखे तो वह उस संख्या के इकाई के स्वरूप को ही दर्शाता है। जैसे 01, 02, 03 आदि। वही यदी इसी शून्य को हम किसी संख्या के बाद निर्धारित करें तो वह उस संख्या के मान को अनिश्चित एवं अनंत तक बड़ा सकता है। जैसे 20, 300, 4000, 10,0000, आदि अनंत तक और वही अगर इसे हम प्रतिशत का चिन्ह बनाने के लिए करें तो इसके मायने ही बदल जाते है। अतः यहाँ पूर्ण रूप से अगर यह कह सकते कीी वह सिन्धु लिपि पढ़ी नहीं गयी तो हम यह भी नहीं कह सकते कि हमने उसके कुछ चित्रों को समझा भी नहीं। हमने उन्हें देखा और देखकर कहा की अरे यह तो शून्य के जैसा लगता है। अतः हम यह कह सकते है कि बैशक यह ज्ञात कि सिनु लिपि पढ़ी नहीं गयी तो हम बता नहीं सकते कि व गोल व शून्य सदृश्य वस्तु या चिन्ह क्या है। परन्तु उसे वर्तमान ज्ञान के आधार पर अनुभव करके हम यह तो कह सकते है कि वह शून्य अवश्य है। अतः हम परोक्ष रूप से यह कह सकते है कि सिन्धु सभ्यता में भी शून्य जैसी कोई वस्तु थी जिसका प्रयोग सिन्धुवासी प्रचुर मात्रा में करते थे।

सिन्धु सभ्यता में शून्य के प्रामण

सिन्धु सभ्यता की खोज वैसे तो 1923 ई0 में हुई थी। परन्तु इसके सर्वाधिक पुराने नमुने हमें 1853 ई0वी0 से ही प्राप्त होते है।2 सिन्धु सभ्यता की खुदाई से हमें लगभग 64 मूल चिन्ह एवं 205 से लेकर 400 तक के अक्षरों के नमुने प्राप्त हुए है। सिन्धु सभ्यता की लिपि चित्रात्मक लिपि थी। जिसका उत्कीर्षन सेलखडी एवं तांबों की मुहरों पर किया गया था। वैसे इस लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका हैं तथा इस लिपि में हमें 17 ऐसे बड़े चिन्ह प्राप्त हुए है। जो शून्य को प्रदर्शित करते है तथा जिनसे हमें सिन्धु सभ्यता में शून्य के होने का प्रमाण प्राप्त होता है इन प्रमाणों में हमें यहाँ से प्राप्त मोहरों से प्राप्त होते है। जैसे सिन्धु सभ्यता में वर्गाकार मोहरे आयताकार मोहरे या गोलाकार मोहरे यहाँ इन मोहरों का गोलाकार होना इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि सिन्धु सभ्यता में शून्य का विकास था। इसके अतिरिक्त यदि हम मोहरों के स्थान पर हड़प्पा कालीन लिपि के चित्रों को देखते है तो उन चित्रों में भी हमें कई स्थानों पर गोलाकार चित्र प्राप्त हो जाते है। जो कई स्थानों पर लगभग आर्यभ्ट की शून्य के सृदृश्य नजर आते है।[3] बेशक यह हडप्पा कालीन

लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है और इनको देखकर जो अनुभव प्राप्त होता है उसे हम वर्तमान ज्ञान के आधार पर कही त्रिभुजाकार कही, आयताकार कही गोलाकार कही वर्गाकार, कही षष्ठ भुजाकार आदि शब्दों में पिरोकर प्रस्तुत करते है। तो फिर वही इन चित्रों व मुहरों के निर्माण में प्रयोग किये जाने वाले उस गोल चिन्ह को हम जीरों या शून्य क्यों नहीं कह सकते जो कि देखने में और अनुभव करने में हमें शून्य सदृश्य नज़र आता है। अतः यहाँ इन प्रमाणों से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि शून्य तो सिन्धु सभ्यता में भी है। परन्तु उस शून्य को हम पढ़े कैसे जैसे शून्य के प्रयोग करने पर हमें पाते है कि यदि शून्य को किसी संख्या से पूर्व लिखे तो वह उस संख्या के इकाई के स्वरूप को ही दर्शाता है। जैसे 01, 02, 03 आदि। वही यदी इसी शून्य को हम किसी संख्या के बाद निर्धारित करें तो वह उस संख्या के मान को अनिश्चित एवं अनंत तक बड़ा सकता है। जैसे 20, 300, 4000, 10,0000, आदि अनंत तक और वही अगर इसे हम प्रतिशत का चिन्ह बनाने के लिए करें तो इसके मायने ही बदल जाते है। अतः यहाँ पूर्ण रूप से अगर यह कह सकते कीी वह सिन्धु लिपि पढ़ी नहीं गयी तो हम यह भी नहीं कह सकते कि हमने उसके कुछ चित्रों को समझा भी नहीं। हमने उन्हें देखा और देखकर कहा की अरे यह तो शून्य के जैसा लगता है। अतः हम यह कह सकते है कि बैशक यह ज्ञात कि सिनु लिपि पढ़ी नहीं गयी तो हम बता नहीं सकते कि व गोल व शून्य सदृश्य वस्तु या चिन्ह क्या है। परन्तु उसे वर्तमान ज्ञान के आधार पर अनुभव करके हम यह तो कह सकते है कि वह शून्य अवश्य है। अतः हम परोक्ष रूप से यह कह सकते है कि सिन्धु सभ्यता में भी शून्य जैसी कोई वस्तु थी जिसका प्रयोग सिन्धुवासी प्रचुर मात्रा में करते थे।

वैदिक युग में शून्य का अस्तित्व- वैदिक युग में हमारे सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद सहित अन्य तीनों वेदों में हमें शून्य के स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होते हैं जो इस प्रकार है।

ऋग्वेद

ऋग्वेद एक ऐसा ग्रन्थ जो सभी ज्ञानों का जन्मदाता कहा जाता है। हमें इस वेद में भी शून्य का स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होता है जो प्रस्तुत श्लोक में निम्नलिखित हैः-

"अस्य पीत्वा शतकृतों घनों वृत्राणाम भवः।
प्रावों वाजेषु वाजिनम॥8॥[4]

अर्थात्- है सैकड़ों यज्ञ करने वाले इन्द्र देव। इस सोमरस को पीकर आप वृत्र-प्रमुख शत्रुओ के संहारक सिद्ध हुए है। अतः आप संग्राम में वीर योद्धाओं की रक्षा करें।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में वणित एवं लिखिए यह श्लोक इस बात का स्पष्ट प्रमाण है। की वेदों में भी शून्य के प्रयोग पर बल दिया गया क्योंकि जहाँ शत का तात्पर्य सैंकड़ों से है और यह तो सर्वविदित है। कि जब सौ है तो सौ के निर्माण में शून्य का प्रयोग तो अवश्य हुआ होगा। अतः यह कहना की भारत में शून्य का आगमन 5वीं सदी में हुआ है। तो यह सर्वथा बेइमानी होगी। ऐसे न जाने कितने शून्य से सम्बन्ध उदाहरण हमारे वेदों में लिखित है। ऐसा ही एक और उदाहरण ऋग्वेद में इस प्रकार है।

"इन्द्रः सहस्त्रदाना वरूणाः शंस्यानाम।
कृर्तीवत्युक्थ्य॥4॥[5]

यहाँ इस श्लोक में जो ऋंग्वेद के प्रथम मण्डल सूक्त 17 तथा श्लोक 4 में सहस्त्र शब्द का उल्लेख है। जिसका तात्पर्य हजार से होता है और जहाँ तक हम जानते है। हजार के निर्माण में तीन शून्यों की आवयकता पड़ती ळै। तब हम यह कैसे कह सकते है कि शून्य का उद्भवकाल 5वीं सदी है। फिर यदि शून्य का उदभव काल 5 वीं सदी है तो फिर वेदों में ये शत, सहस्त्र, शब्द कहा से आ रहे है तथा इनका निर्माण किस आधार या संख्या के बूते पर होत रहा है।

ऋग्वेद के अतिरिक्त यजुर्वेद में तो संख्याओं का सम्पूर्ण क्रम दिया गया। उदाहरण के लिए यजुर्वेद के नौवें अध्याय के श्लोक 31 से लेकर श्लोक 34 तक लगभग 17 तक की गिनती है। जिसमें बीच में श्लोक 33 में दशाक्षरेण शब्द का वर्णन है।[6] जिसमें दश का तात्पर्य दस से आता है। यचदि हम क्रम से इस बात को देखे तो इसमें कोई सन्देह, नहीं की शून्य का अविष्कार एवं इसका प्रयोग 5वीं सदी से पूर्व ही भारत में होता रहा है।

अथर्वेद

अथर्वेद में भी कई जगह पर कई श्लोकों में शून्य का प्रयोग किया गया है। यदि हम उदाहरण के लिए देखे तो अथर्वेद के प्रथम काण्ड के सूक्त 11 के श्लोक 3 में सहस्त्र तथा शत आदि शब्दों का उल्लेख कई बार है।7 मात्र इसी अध्याय में ही नहीं अपितु अथर्वेद के लगभग सभी काण्डों में कही ना कही एक या दो या फिर कई स्थानों पर ऐसे शब्दों का प्रयोग बड़े आराम से मिल सकता है। जिनसे या जिनमें शून्य के होने का आभास प्राप्त होता हो। यहाँ तक तो हमने वेदों में शून्य के प्रादुर्भाव को देखा है तथा शून्य के प्रयोग को भी जाना है। जो यह सिद्ध करने में सक्षम है कि शून्य का प्रयोग आदिकाल से जब से मानव सभ्यता ने सभ्यता नामक शब्द को ग्रहण किया है। तब से जान भी रहे है और मानकर प्रयोग भी कर रहे है।

उत्तर वैदिक युग में शून्य का प्रयोग- यह तो सर्वविदित है कि जब वैदिक काल में ही शून्य का प्रयोग होता रहा है तो फिर शून्य के प्रयोग तथा शून्य के इस युग में होने का कारण तो कोई विशेष नहीं हो सकता है। मानव उसी मांगे पर चलना चाहता है। जोसम्भवता उसके सम्पूर्ण ज्ञान तक तथा सुरक्षा को सुनिश्चित करता हो और ऐसा मार्ग तो वहीं हो सकता है। जिसे उसके पूर्वजों ने उसके लिए बनाया हो तथा उसके उस मार्ग पर बचपन से ही चलना सिखाया हो तो यहाँ इस उत्तर वैदिक युग में शून्य का होना व उसके प्रयोग का वर्णन बिल्कुल उपर दिये गये सुलभ एवं सुरक्षित मार्ग की भांति हेतु जिसे वेदों में बताया गया। फिर ीाी इस युग में कुछ महाकाव्यों का निर्माण हुआ था जैसे रामायण और महाभारत और इन महाकाव्यों में भी शून्य का वर्णन मिलता है। जो इस प्रकार है

महाभारत

महाभारत जिसे जय संहिता भी कहा जाता है के आदि पर्व में सर्पों के जन्म की कथा में हजार (सहस्त्र) शब्द का वर्णन हमें प्रारम्भ में ही प्राप्त हो जाता है8 अतः यहाँ पर भी हजार का वर्णन शून्य के बिना कैसे सम्भव हो सकता है।

रामायण

रामायण भगवान प्रभु श्री राम के जीवन चरित का एक महान ग्रंथ जिसमें बाल काण्ड में एक श्लोक आता है जो इस प्रकार है।

"वने तस्मिन्विसता जनस्थाननिवासिनाम।
रक्षासां निहतान्यासन्सहस्त्राणि चतुर्दश॥47॥[9]

उपरोक्त लिखित श्लोक में सहस्त्राणि चतुर्दश शब्दों का उल्लेख है जो यहाँ पर सहस्त्राणि अर्थात हजार और चतुर्दशा अर्थात् चौदह को व्यक्त करता हो जिसे यदि मिलाया जाये तो यह चौदह हजार (14000) बन जाता है। यदि यहाँ पर रामायण में चौदह हजार है तो फिर कैसे कह सकते है कि शून्य 5वीं सदी में आया। यहाँ रामाण और महाभारत में ऐसे कई काण्ड एवं पर्व और उनमें निहित कई श्लोक मिल जायेंगे जो यह बता सकते है कि शून्य का प्रयोग उस युग से होता आ रहा है। जिसे कुछ लोग युग ही नहीं मानते है अतः यह नहीं कहा जा सकता की प्राचीन भारतीय ज्ञान एवं विज्ञान परम्परा में शून्य का प्रयोग नहीं होता था। यदि देखा एवं समझा जाये तो शून्य का प्रयोग तो उसे शून्य काल से हो गया था। तब सम्पूर्ण विश्व या अखिल सृष्टि शून्य ही थी। अर्थात् जब कुछ भी नहीं था। तब भी शून्य था और यह मैं नहीं मेरा शोध नहीं अपितु नासा जैसा एक वैज्ञानिक संस्था इस बात को अपने डार्क एनर्जी प्रोग्राम में बताती है।10लेकिन सत्य क्या है। ये तो वो निर्धारिक जाने जिन्होंने इसका निर्धारण किया कि शून्य का जन्म एवं प्रयोग कब हुआ। लेकिन सत्य तो यही है कि यदि भारत की सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है तो सृष्टि के सबसे प्राचीन सत्य शून्य का जन्मदाता भी भारत ही है। लेकिन यह कहना कि शून्य का आगमन 5 वी सदी में हुआ तो यह कहना गलत होगा। क्योंकि जब हम दिये गये सन्दर्भ इसका अध्ययन या शोध करें तो हम शून्य को भारत की प्राचीन सभ्यता से ही पाते है और यही सत्य है।

उद्देश्य

इस शोध-पत्र का एक मात्र उद्देश्य बस इतना है कि यह सिद्ध किया जा सके कि भारत में शून्य का प्रयोग प्राचीन भारतीय सभ्यता के विकास के साथ ही हो चुका था। मैं यह नहीं कहता की आर्यभट्ट ने 5वीं सदी में शून्य का अविष्कार नहीं किया। परन्तु यह अवश्य सिद्ध करने का प्रयत्न करता हूँ कि शून्य भारत की ही देन है। अपितु 5वीं सदी से नहीं अपितु प्राचीन समय से भारत ने शून्य को विश्व को दिया है। अतः इस शोध-पत्र में वर्णित सभी तथ्यों एवं सन्दर्भ को अध्ययन करने की आवश्यकता है। जिससे यह पूर्णता सिद्ध हो कि भारत ने विश्व को शून्य उसके प्राचीन काल से ही प्रदान कर दिया था। यह बात अलग है कि किसी को यह बात बाद में समझ आयी हो। जैसे यदि हम उदाहरण देखे कि जब जैन धर्म ने स्यादवाद को जनम दिया तो उसे संसार ने एक दर्शन कटकर प्रकाश परन्तु जब वहीं स्याद-वाद किसी वैज्ञानिक ने डार्क एनर्जी या डार्कमेटर से प्रस्तुत किया तो वह भौतिक विज्ञान की एक अद्भुद खोज बन गयी। बस यही अंतर में अपने शोध-पत्र के माध्यम से समझाना चाहता हूँ और यही मेरे शोध-पत्र का उद्देश्य है।

निष्कर्ष

इस शोध-पत्र भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में शून्य के प्रयोग एवं उपयोग के सन्दर्भ में किये गये शोध कार्य एवं उसके परिक्षण के पश्चात यह तो पूर्णतः सिद्ध हो जाता है। कि भारत में शून्य का प्रयोग प्राचीनकाल से ही होता आ रहा है परन्तु इतने साक्ष्यों के उपरांत भी यह वक्तव्य पुस्तकों में क्यों दिया जाता है कि भारत में शून्य का उद्भव 5वीं सदी से ही हुआ जबकि सिंधु सभ्यता से प्राप्त चिन्ह, चारों वेदों में बार-बार प्रत्येक सूक्त, काण्ड या ऋचाओं में शून्य के संयोग से निर्मित होने वाले अंकों के विवरण तथा दोनों प्राचीन महाकाव्यों में इन्ही अंकों का विवरण बार-बार इसी ओर इंगित करता है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में शून्य का प्रयोग हुआ जो कि इस शोध-पत्र के माध्यम से सिद्ध होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. *Internet (Nasa Dark Energy Wikipedia)*
2. *Internet/amp.tharatdiscoverg.org*
3. *वही*
4. *ऋग्वेद संहिता प्रथम मंडल सूक्त 4 श्लोक 8*
5. *वहीं*
6. *यजुर्वेद संहिता नौवा अध्याय श्लोक 33*
7. *अथर्वेद संहिता प्रथम काण्ड श्लोक 3*
8. *महाभारत आदि पर्व*
9. *रामाण बालकाण्ड 47वां श्लोक*
10. *Wikipedia/NASA/Internet*